नासिरा शर्मा के कथा साहित्य मे 'अल्पसंख्यक' विमर्श

शेख परवीन बेगम शेख इब्राहीम
(शोध छात्रा)
स्वा.रा.ति.म. विश्वविद्यालय, नांदेड
जि.नांदेड, महाराष्ट्र ।

डॉ. प्रा. संतोष येरावार
(हिंदी विभाग प्रमुख)
देगलूर महाविद्यालय देगलूर
ता.देगलूर जि.नांदेड, महाराष्ट्र ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि साहित्य की जडे समाज में होती है । साहित्य और समाज का अटूट रिश्ता है । इसलिए साहित्य में निहित स्थितियों की व्याख्या और मूल्यांकन केवल रसानुभूति तक करना उचित नहीं है, क्योंकि साहित्य मनुष्य और उसके समाज को समझने का सुख मुहैया करता है । साहित्यकार की सामाजिक गतिविधियों पर पैनी नजर होती है । साहित्य और साहित्यकार ही एक ऐसे माध्यम है जो विषय अध्ययन के योग्य नही समझे गए थे उनको हाशिएँ से केंद्रबिंदू में लाने का काम करता है । इस दृष्टि से 'अल्पसंख्यक' समुदाय समाज का एक महत्वपुर्ण अंग माना गया है ।

प्रश्न अब यह उठता है की 'अल्पसंख्यंक' शब्द से तात्पर्य क्या है ? वे किस देश–प्रदेश के है ? उनकी संस्कृति और सभ्यता किस प्रकार की है ? उनके तीज त्यौहार कौनसे है ? उनका रसन–सहन आचार–विचार किस तरह का हौता है ? उनकी समस्याएँ कौन–कौनसी है ? उनकी स्थिती कैसी है ? 'अल्पसंख्यक' समूह के अंतर्गत कौन–कौन आते है ? इन सभी का अध्ययन करना मतलब 'अल्पसंख्यक' विमर्श ।

भारत एक विविधताओवाला राष्ट्र है । यहॉ पर सभी वर्गो के लागे निवास करते है । इन वर्गो को तीन भागों में विभाजित किया जाता है । उच्च–मध्यम एवं निम्न वर्ग । निम्न वर्ग का नाम लेते ही हमारे मस्तिष्क मे प्रायः आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से कमजोर एवं पिछडे वर्ग की छबि बन जाती है । इसी प्रकार 'अल्पसंख्यक' यह नाम आते ही हमारा ध्यान मुस्लिम,

सिक्ख, ईसाई, पारसी, बौध्द, जैन, आदि कि ओर चला जाता है । किंतु 'अल्पसंख्यक' की कोई मान्य परिभाषा नहीं है । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 में 'अल्पसंख्यक' शब्द का उल्लेख हुआ है, किंतु उसमें उसे परिभाषित करने का प्रयास नहीं किया गया है ।

'अल्पसंख्यको' को दो आधार पर विभक्त किया जाता है । प्रथम 'धार्मिक अल्पसंख्यक' समूह जिनमें मुस्लिम, सिक्ख, बौध्द, जैन पारसी आदि धर्मों के व्यक्ति सम्मिलीत है । तथा 'व्दितीय भाषीय अल्पसंख्यक' जिनमें तेलगू, बंगला, उर्दु, गुजराती, कन्नड, काश्मिरी आदी भाषा–भावि व्यक्ति आते है जो बहुसंख्यक हिंदी भाषि लोगो की संख्या में कम है ।

'अल्पसंख्यक' शब्द को ॲग्रेंजी में Minority कहा जाता है । 'अल्पसंख्यक' शब्द के संदर्भ मे यह तथ्य है की 'अल्प' विशेषण में संख्या इस सामासिक शब्द लगने से 'अल्पसंख्यंक' शब्द बना है ।

संयुक्त राष्ट्र के एक विशेष प्रतिवेदक 'फ्रेंसिस्को कॉपोटोर्टी' ने एक वैश्विक परिभाषा दी, जिसके अनुसार. ''किसी राष्ट्र राज्य में रहनेवाले ऐसे समुदाय जो संख्या में कम हो और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, रूप से कमजोर हो एवं जिनकी प्रजाति धर्म भाषा आदी बहुसंख्यको से अलग होते हुए भी राष्ट्र के निर्माण विकास, एकता संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय भाषा को बनाये, रखने में अपना महत्वपुर्ण योगदान देते हो, तो ऐसे समुदायों को उस राष्ट्र राज्य में 'अल्पसंख्यक' माना जाना चाहिए''।[1]

अल्पसंख्यको में सर्वाधिक संख्या मुसलमानों की है इसके बाद ईसाई, सिक्ख, बौध्द आदि की । भारत एक विशाल राष्ट्र है । यहाँ पर सभी वर्गो के लोग निवास करते है । भारतीय समाज के दो बडे समुदाय हिंदू–मुसलमानों के बिच परस्पर सहाचार्य और साँझी संस्कृती के दर्शन हमें देखने को मिलते है । मुस्लिम समाज भारतीय समाज का अभिन्न अंग है । यो तो काफी पुराने समय से हिंदी साहित्य में मुसलमान साहित्यकार उभरे है, जो अपने समाज व लोगों के बारे में तो लिखते ही है । साथ ही दूसरों के बारे में लिखते रहे है । जैसे रहीम अद्दहमान, जायसी मंझन आदी । किंतु हिंदी साहित्य में ऐसे भी साहित्यकार है जो स्वंय मुस्लिम न होने के बावजुद मुसलमानों के बारे में भी खुब लिखा है, जैसे प्रेमचंद, यशपाल आदि के उपरांत हिंदी साहित्य में मुस्लिम समाज का चित्रण लगभग गायब हुआसा नजर आता है । ऐसी स्थिती में मुस्लिम समाज में पली–बढी प्रगतीशील विचारधाराओं से युक्त नासिराजी ने मुस्लिम समाज का अनुठा चित्रण अपने साहित्य में किया है । जिसके अंतर्गत उन्होंने मुस्लिम समाज कि दिशा और दशा, स्थिती और विषमताओं को बडी बेबाकी से चित्रित किया है ।

भारत देश में हमें हिंदू–मुस्लिम साँझी संस्कृती के दर्शन होते हैं । यहाँ हिंदू–मुसलमानों की गंगा जमुनी तहजीब नदी की धारा की तरह बहती दिखाई देती है । जिसका चित्रण नासिराजी ने अपने उपन्यास 'पारिजात' के अंतर्गत किया है । ताजियों का, मर्सिया ख्वानी और मार्मिक नौहे गाती हिंदू–मुस्लिम आबादी का हृदयस्पर्शी चित्रण बेहद प्रभावी ढंग से उल्लेखित किया है, जहाँ प्रोफेसर प्रल्हाद दत्त कार्यवश मुहर्रम के महीने मे अपने शिष्य अरशद के गाँव उ.प्र. मे. जाते है ।

वही देश विभाजन के साथ पुराने सामाजिक संबंधो में खट्टास आ गई है । इस देश की साँझी संस्कृति भी इस बॅटवारे का शिकार हुई । साम्राज्यवादीयों व्दारा बोया गया यह सांप्रदायिकता का बीज तेजी से फलने–फुलने लगा और यह भारतीय राजनीति का अनिवार्य हिस्सा बन गया । जिस कारण मुसलमान समाज सभी स्तरों पर उपेक्षा का शिकार हुआ । 'सरहद के इस पार' इस कहानी का एक पात्र रेहना पर व्यंग्य करते हुए कहता है ''रहते है हिंदुस्तान में मगर सपने देखते पाकिस्तान के ।''[2] नारायण जी का जुमला रेहान को नश्तर चुभों रहा था ।

जब देश विभाजन हुआ विभाजन के पश्चात प्रभावित मुस्लिम समाज का चित्रण नासिरा जी ने अपने 'जीरो रोड' उपन्यास के अंतर्गत किया है, साथ ही देश में हिंदू–मुसलमान धर्मों के लोगों में बरसो से भााईचारा का संबंध रहा है किंतु सांप्रदायिकता का विष जैसे जैसे फैलना शुरू हुआ दोनों धर्मो में दरार पडने लगी । यह दरार कुछ धर्मांध लोगों की वजह से इतनी कट्टर बन जाती है कि कुंभ के मेले में मुसलमान व्यापारीयों को दुकान लगाने की इजाजत देना नहीं चहाते जिसका वर्णन नासिराजी ने अपने 'जीरो रोड' उपन्यास के अंतर्गत किया है । इस उपन्यास के पात्र लाला चुन्नीलाम और ललित प्रसाद ने तो अपना विवके बेच डाला है । उनका तर्क था कि ''जब उनकी नहान पर और हिंदू धर्म पर श्रध्दा नही तो फिर कामई क्यों ? लाभ तो उन्हें जाना चाहिए जो अपने हैं ।''[3] मनिहारनों में से सारे मुसलमानों के नाम काट दिये।

जब की मुसलमान समाज का मुख्य व्यवसाय व्यापार ही रहा है । बरसों से ये लोग व्यापार ही करते आ रहे हैं । तब इसी उपन्यास का एक पात्र जगतराम एक उदारमतवादी व्यक्ति है वे इसका विरोध करते हुए कहते है कि ''अरे भाई ! तुम धर्म के नाम पर अब रोजगार दोगे ? धंधे की इजाजत दोगे ? यह भी कोई बात हुई ? एक उसमें से महाशय बोल उठे 'आप हिंदू कहलाने के लायक नहीं है ।''[4]

इस धार्मिक कट्टरता के कारण भी मुस्लिम समाज सदैव उपेक्षा का शिकार हुवा नजर आता हैं। 'पारिजात' उपन्यास मे नासिरा शर्मा ने इतिहास पर युवाओं के औचित्य – अनौचित्य के साथ उनकी वर्तमान समस्याओ पर भी लेखनी चलाई है। पश्चिम के पुर्वग्रह से पीडित युवाओं के दर्द उनकी व्यथा को उकेरा है ''दरअसल इस (टेररिजम) के पीछे की सियासत जो भी हो मगर उसने मुसलमानों का इंटरनेशनल चेहरा बिगाड दिया है।''[5] यह वाक्य स्वप्न देखनेवाले दिन–रात मेहनत करने वाले उन युवाओं के दर्द का बया करता है जिनका जीवन सियासत के मार के नीचे पथरा चुका है।

पुरूष द्वारा नारी का शोषण हर समाज मे होता रहा है। नारी यह तीन 'प' के बंधन मे जकडी हुई है। पिता, पती, पुत्र चाहे स्त्री किस भी धर्म या संप्रदाय की हो पर अन्य समुदाय की तुलना मे मुस्लिम स्त्रि की दशा अत्यंत शोचनीय है। धर्म के ठेकेदार भारत जैसे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में भी मुस्लिम स्त्रियों को मिलनेवाले अधिकारों का विरोध करते है। धर्म की आड में मुस्लिम समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्थाने अनेक कुरितियों का निर्माण कर लिया है जिसे मुस्लिम समाज के सभी लोगों को मजबूरन स्विकार करना पडता है। इस व्यवस्था के शोषण अत्याचार एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नियमों का शिकार होना पडता है। किंतु 'ईस्लाम धर्म' समानता के बर्ताव पर जोर देता है क्योंकि इस्लाम की दृष्टि में सभी मुसलमान समान है। यह धर्म, कथनी और करनी में एकता पर वह विश्वास रखता है। जहाँ कथनी और करनी में फर्क दिखाई पडता है वहाँ मुस्लिम समाज की आवाज बुलंद होती है, वह कभी 'संगसार' के रूप मे अपनी भूमिका अदा करती है।

नासिरा शर्मा की 'संगसार' कहानी मुस्लिम समाज में नारी की नियती का उल्लेख करती है और धर्म के प्रति अपना विद्रोह अभिव्यक्त करती है। इस कहानी की पात्र आसिया की एक छोटी सी भूल मुस्लिम समाज के पितृसतात्मक व्यवस्था में बहुत बडा पाप मानी जाती है, और इसकी एक ही सजा हो सकती है 'संगसार' जो पत्थरों से मार–मार कर उसकी जान लेना है। आसिया की माँ अपनी बडी बेटी आसमा से कहती है कि ''मर्द सीगा भी करेगा ब्याहता के रहते दूसरी शादी भी करेगा और बाहर भी जाएगा उसे कौन रोक सकता है भला ? लोग थू–थू भी करेंगे तो फर्क नही पडता मगर औरत यह सब करेगी तो न घर की रहेगी न घाट की। दूसरा शोहर करना तो दूर किसी से आशनाई भी हुई तो दुनिया उसे हरामकारी और मजहब उसे जनकारी कहेगा मगर उसके सिर पर तो इन्कलाब सवार है।''[6] आसिया को समझाने के लिए खाला को बुलाया जाता है मगर आसिया खाला के समझोते के नामंजूर करती

है | क्योंकि आसिया को आजादी चाहिए इसकी किंमत जान देने से चूकती है तो उसे यह भी स्विकार है | आसिया बेखौफ बडी निडरता के साथ कहती है कि ''आपका पुराना कानून नई परेशानियों का हल नहीं जानता मरते घटते इन्सान की मदत को नहीं पहुँचता | इसलिए आप जिंदगी को खौफ की दीवारों मे चुना देना चहाती है ताकी इन्सान एक बार मिली जिंदगी न जी सके |''[7]

अंत मे आसिया को अपने बेखौफ मुक्ति की किंमत जान गवा कर चुकानी पडती है | वह धार्मिक नियम और फत्वो के आधार पर 'संगसार' कर दी जाती है | कहानी के अंत मे लेखिका ने सवाल उठाया कि अगर समाज आसिया को दोषी मानता था और उसकी सजा का पक्षधर था तो फिर आसिया की मृत्यु पर ''उस रात औरतो ने चुल्हे नही जलाएँ मर्दोने खाना नही खाया सब एक दूसरेसे ऑख चूराते रहे | यदि आसिया गुन्हेगार थी तो फिर उसे 'संगसार' होने पर यह दर्द यह कसक उनके दिलो को क्यों मथ रही थी |''[8]

भारतीय मुस्लिम समाज का आर्थिक – शैक्षिक पिछडापन ही उनकी अनेक समस्याओं का कारण है | शिक्षा आर्थिक जीवन के इस पक्ष में आधुनिकीकरण की प्रवृत्ती उत्पन्न करने में कहीं–कही सफल नही हो सकी | साथ ही मुस्लिम समाज के कुछ लोग अपना परंपरागत व्यवसाय को न बदलने की इच्छा के चलते इस समाज में व्याप्त बेरोजगारी का कारण बनता चला जा रहा है | जिसका वर्णन नासिरा शर्मा जी ने अपनी 'कातिब' इस कहानी के अंतर्गत किया है | नौशबा अपने पती अकरम से कहती है | ''इस किताबत में मुआ क्या रखा है ? दिन–रात आँखे फोडो तब जाकर चार पैसे हाथ लगते है |'' प्याली तिपाई पर रखते हुए नौशबा बोली |खानदानी हुनर है | अकरम मियाँ ने कलम रखते हुए कहा |

''हमारी बहन के ससुराल में क्या खानदानी हुनर नही है | अच्छा खाते–पीते है और कल के लिए कुछ जोडते भी है वक्त – जरूरत पर दुसरों के हाथो पर कुछ रखते भी है | नौशबा ने चिढकर, कहाँ तो अकर मियाँ ने कहा, ''खानदानी हुनर की मिट्टी पलीद न करो | वह ठहरे लकडी की टाल वाले | उसमे क्या हुनर नजर आया तुम्हे वह तो धंधा है |''[9]

ज्ञान और शिक्षा मानव – प्राणी के उच्चतम विकास की निशानी है | इस्लाम ज्ञान और शिक्षा की बहुत कद्र करता है, क्योंकि शिक्षा से मानव में सोचने समझने की शक्ति आती है | इस्लाम धर्म की पहली आयत है 'इकरा' जिसका अर्थ है पढो | प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है कि ज्ञान को प्राप्त करो चाहे वह स्त्री हो या पुरूष | शिक्षा से ही मानव स्वाभिमानी बनकर विरोधी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकता है |

भारत मे अन्य समुदायों की अपेक्षा मुस्लिम समुदाय की स्त्रियों की हालात और भी बदत्तर है | शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, स्वतंत्रता हर मामले मे मुस्लिम स्त्री की दशा शोचनीय है, किंतु समय के साथ हर व्यवस्था या समाज मे परिवर्तन होता रहा है | उसी तरह मुस्लिम समाज में भी परिवर्तन को देख सकते है | एक समय था जो की मुस्लिम स्त्री को घर की चार दीवार में कैद रहकर अपनी जिंदगी गुजारनी पडती थी | अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नही थी | लेकीन समकालीन समय मे मुस्लिम स्त्रियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है | शिक्षा के कारण नारी मे रूढियों परंपराओ और अंधविश्वासो के प्रती विश्वास कम हुआ नजर आता है | और इसमे साथ दे रहे आज के मुस्लिम युवक जो मुस्लिम स्त्रियों को उच्चशिक्षित बनाने के पक्ष मे है |

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' मे ऐसे मुस्लिम युवक की अभिव्यक्ति हुई है जो मुस्लिम स्त्रियों को उच्च शिक्षित बनाने के पक्ष मे है | जब महरूख विाह योग्य होती है उसके माता–पिता उसके विवाह के संबंध मे चिंता व्यक्त करते है, महरूख का मंगेतर रफत विवाह से पहले उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है | वह महरूख को भी उच्च शिक्षा प्राप्ती के लिए प्रेरित करता है | रफत के माध्यम से ऐसे मुस्लिम युवक की अभिव्यक्ती हुई है जो मुस्लिम स्त्रियों को उच्चशिक्षीत बनाने के पक्ष मे है | वर्तमान समय को दृष्टि मे रखते हुए दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर साथ चलनेवाले एक सकारात्मक मुस्लिम परिवार का चित्रण इस उपन्यास के माध्यम से हुआ है | रफत महरूख के परिवार वालो को समझाते हुए कहता है कि, ''मुझपर आखिर एतबार न करने की वजह क्या है ? सारे जहाँन की लडकिया बाहर जाकर पढती है | आप लोगों को दुनिया की कोई खबर है भी या नही ? अलीगढ जाकर देखिए जहाँ हर दूसरी लडकी किसी न किसी कस्बे या गाँव से भाई, या रिश्तेदार के साथ जाकर पढ रही है | ये लडकियाँ भी तो किसी की बेटी और बहन है ? घरों से आती है, जंगल से तो नही ? पढाई जहा गाँव–गाँव मे फैल रही है, वहाँ आप लडकी को आगे पढाने में झिझक रहे है | सिर्फ इस लिए कि मै उसका खालाजाद भाई नही मंगेतर भी हूँ और यह ख्वाहिश उसके होने वाले शौहर की तरफ से आई |''[10]

इस तरह नासिराजी ने अपने साहित्य मुस्लिम जीवन के यथार्थ का बहु आयामी चित्रण किया है | पीडित कुंठित विस्थापीतो की समस्याओं को वाणी देने का अनुठा प्रयास किया है | मनुष्य को धर्म संप्रदाय के आधार पर बाँटना बेईमानी है | उनके पास आर–पार और दूर तक देखनेवाली दृष्टी सही माने मे मानवीय है | भाईचारे का पैगाम देनेवाली पारर्शी है |

संदर्भ सुची :

1. https://m.bharatdiscocery.org
2. कहानी समग्र 'खंड एक' – नासिरा शर्मा – पृ. 199
3. जीरो रोड – नासिरा शर्मा – पृ. 72
4. जीरो रोड – नासिरा शर्मा – पृ. 73
5. पारिजात – नासिरा शर्मा – पृ. 127
6. कहानी समग्र खंड दो – नासिरा शर्मा – पृ. 129
7. कहानी समग्र खंड दो – नासिरा शर्मा – पृ. 131
8. वही – नासिरा शर्मा – पृ. 148
9. कहानी समग्र खंड दो – नासिरा शर्मा – पृ. 224
10. ठिकरे की मंगनी – नासिरा शर्मा – पृ. 25

https://shodhaganga@inflibnet.ac.in